Item Code: 958

Participant Code: 049

बदलती बरसात

धड़कता है बिजली
काला है आसमान
मिट्टी की पुकार
को सुनते ही,
आ गई है बरसात।

उसके बूँदें धीरे-धीरे
छुआ मिट्टी के गालों को।
उनके बीच के प्रेम से
अब उगा एक कली।

एक सुंदर सी कली
जो फैलाती है खुशबू,
सच्चाई का।
एक नन्ही सी कली
जो देता है प्रकाश,
प्रतीक्षा का।

पानी के बदले कुछ और
बरस रहा है अब।
चट्टान बन गई धूली
नदियाँ बन गई धुआ।
और उस नन्ही सी कली,
मिट्टी में ही मिल गई वह!

बरसात की प्यार अब
गुस्से में बदल गई।
मिट्टी की पुकार अब
चिल्लाहट में बदल गई।

बरसात अब मिट्टी को
छूता नहीं।
बल्कि मारता है वह।
चीखता है वह!
मिट्टी की मुसकुराहट
अब रुलाहट में बदल गई है।
मिट्टी की लाल गाल
अब काले में बदल गई है।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

Item Code: 958 Participant Code: 049

धड़कता है बिजली
लाल है आसमान,
अब कौन सुनेंगे
मिट्टी की दर्द भरी
'पुकार'!...